मनुष्य आसानी से
प्राणियों की एवं स्वयं
की सहायता कर सकते हैं।
यह कतई असुविधाजनक नहीं है।
यहाँ पर दिये गये सुझावों
में से कुछेक पर भी आप
अमल कर पाते हैं,
तो प्राणियों को काफी फर्क पडेगा।
तो क्यों न प्रारंभ करें?
थोड़े से जतन की तो बात है।

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
एक ऐसी जीवनपद्धति है
जो किसी जीव को, चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो
भय, पीड़ा अथवा मृत्यु नहीं पहुँचाती

अधिक जानकारी के लिए अथवा यदि आप
सहायता करना चाहते हैं तो हमसें संपर्क करें:
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी – भारत
4 प्रिन्स ऑफ वेल्स ड्राइव, वानवडी, पुणे 411 040
टेलिफोन: +91 20 2686 1166 फैक्स: +91 20 2686 1420
ई–मेल: admin@bwcindia.org वेबसाईट: www.bwcindia.org

©2018 © Beauty Without Cruelty

यदि पैकेट के उपर शाकाहारी उत्पाद का हरा चिह्न न लगा हो तो कभी भी अगरबत्ती अथवा सुगंध आधारित उत्पाद न जलायें।

क्यों ? अगरबत्ती और धूप में प्राणिज घटक होने की संभावना होती है, जोकि, उन्हें धार्मिक प्रयोग के लिए अनुपयुक्त बनाती हैं।

रेशम का प्रयोग कदापि न करें।

क्यों ? रेशम पाने के लिए उसके कीड़ों को गर्म पानी में जिंदा जलाया जाता है। किसी भी प्रकार का रेशम, तथाकथित ''अहिंसक-रेशम'', जिसे व्यापक रूप से प्रचारित किया जाता है, भी कत्ल से मुक्त नहीं है।

दीवारों की पुताई करने के लिए अप्राणिज बालों के ब्रश का प्रयोग करें, जिसके उपर ''मानव-निर्मित'' का लेबल लगा रहता है।

क्यों ? दीवारों की पुताई में प्रयुक्त ब्रश के बाल पाने के लिए सूअर को पैरों तले दबा कर उसके बाल उखाड़े जाते हैं।

प्राणी अथवा पक्षी को मारना कदापि बलि का चढावा नहीं हो सकता है।

क्यों ? जीवन के प्रति आदर आध्यात्मिक सद्गुण है।

प्राणी-दौड़ या उनका युद्ध कदापि देखने न जाएँ।

क्यों ? इनके जीतने के प्रशिक्षण में उनके साथ बहुत ज़बरदस्ती व क्रूरता का व्यवहार किया जाता हैं।

बिना प्राणी के ही सर्कस देखें।

क्यों ? भूख, सितम और भय के द्वारा पशु-पक्षियों को सर्कस की रिंग में काम करवाया जाता है। हालांकि, केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण ने जंगली पशुओं के करतब एवं प्रदर्शन पर रोक लगा रखी है, परन्तु कुत्तों, ऊँट, घोड़ों, टट्टू, आकर्षक पक्षियों और बिल्लियों का प्रयोग जारी है।

बॉन चाइना कप में चाय पीने से मना कर दें।

क्यों ? बॉन चाइना में क़त्ल किये पशुओं की हड्डियाँ होती है।

प्लास्टिक से बनी बैग, चिपकने वाली फिल्म, दूध के पाउच, सॅशे, सेलो-टेप, मीठे रॅपर, स्टीकर, गुब्बारे, बैटरी, बोतल के ढक्कन, मेटल पिन और स्टेपलर तक कचरे का निकाल करते समय अलग करें और यथानुसार निकाल करें।

क्यों ? गाय, कुत्ते, बिल्लियाँ, पक्षी और वन्यजीवों की भूलवश प्लास्टिक या धातु खा जाने से मौत हुई है।

सहायता करें: प्राणियों की एवं स्वयं की!

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
जीवनशैली में परिवर्तन के लिए मार्गदर्शक है, जोकि हमारे लिए व प्राणियों के लिए लाभदायी है।

स्मरण रहे,
समस्त जीवोंके लिए आदर का अर्थ किसी भी
जीव को न मारें, न शोषण करें, न दुरुपयोग करें,
कष्ट न पहुँचायें, न प्रयोग में लायें, न सजावटी काम में लायें
अथवा न ही छोटे या बड़े
किसी भी जीव को आहार, फैशन, मनोरंजन,
प्रदर्शन, धर्म के नाम पर
या अन्य किसी भी बहाने न खाएं।

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी
www.bwcindia.org

पक्षियों को पिंजरे में कैद न करें, न ही मछलियों को टैंक में रखें।

क्यों ? ऐसा करना पक्षियों और मछलियों के प्रति क्रूरता है; इसके फलस्वरुप असंवेदनशील मनुष्य बनते हैं।

अनावश्यक खाद्य को कचरे में न डालें। बाहर उचित स्थान पर पानी के लिए बड़ा बर्तन रखें।

क्यों ? जूठन आवारा प्राणियों को खाने के लिए दी जा सकती है। जसके अभाव में पशु कूड़े में खाना तलाशते रहते हैं। जल ही जीवन है पक्षियों को जल चाहिए, विशेष कर ग्रीष्म में।

प्राणियों के बंदीगृह या भूगर्भ कैदखाने की मुलाक़ात कदापि न करें।

क्यों ? आज़ादी, न कि बंधन, इनका जन्मसिद्ध अधिकार है।

वैकेज्ड खाद्य खरीद करने या उपभोग करने के पूर्व जांच लें कि उसके उपर शाकाहारी का हरा चिह्न लगा है।

क्यों ? भूरा-लाल चिह्न मांसाहारी घटक मौजूद होने का संकेत देता है। यदि हरा या भूरा-लाल कोई भी चिह्न न लगा हो, तो वह सामग्री अवश्य मांसाहारी होती है।

पटाखे कभी भी न जलाएं।

क्यों ? पटाखों से बुजुर्गों, बच्चों, प्राणियों, पक्षियों और पर्यावरण को हानि पहुँचती है।

मांस न खाएं, चमड़े का प्रयोग न करें।

क्यों ? मांस और चमड़े में वस्तुत: कोई फर्क नहीं है। दोनों क़त्ल का परिणाम हैं।

पतंग, बिना मांजे के उड़ायें।

क्यों ? पतंग कितनी भी सावधानी से क्यों न उडाई जाए, मांजा अनजाने में ही पक्षियों और मनुष्यों को ज़ख़्मी कर सकता है, पंगु बना सकता है या उन्हें मार डालता है। इसके अतिरिक्त, यह अवैध है, क्योंकि जुलाई २०१७ में राष्ट्रीय ग्रीन ट्रिब्यूनल ने पतंग उड़ाने में माँजे के प्रयोग पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध लगा दिया है।

गुलेल का प्रयोग कदापि न करें।

क्यों ? गुलेल से पक्षियों और छोटे प्राणियों को चोट पहुँचती है, कभी कभी मर भी सकते हैं।

ऊँट, टट्टू या हाथी की सवारी न करें।

क्यों ? यह क्रूर है, अधिकाँश स्थानों पर तो यह अवैध है।

फर को ना कहें।

क्यों ? फर पाने के लिए विशेषत: खरगोश जैसे प्राणियों को पाल कर मारा जाता है।

मोती की जगह पर मूनस्टोन और मूंगा के स्थान पर लाल जास्पर का प्रयोग करें।

क्यों ? मोती सीप की सालों पुरानी यातना और मौत का परिणाम है।

मूंगा-चट्टानें लाखों सूक्ष्म समुद्री जीवों का घर हैं।

चूना न खाएं (पान के उपर लगाया जाने वाला) जोकि कुचले हुए कवच से बनता है।

क्यों ? सूक्ष्म समुद्री जीवों की उनके कवच के लिए हत्या की जाती है।